प्रारम्भिक संबोधन

माननीय सदस्यगण, सप्तदश बिहार विधान सभा के इस द्वादश सत्र में आपसबों का स्वागत है। माननीय सदस्यगण, आज से पवित्र सावन मास का शुभारंभ होने जा रहा है। इसे भगवान शंकर की विशेष भक्ति और कृपा से जुड़ा माह भी मानते हैं। 'शंकर' शब्द का शाब्दिक अर्थ कल्याण है और भगवान शंकर प्रकृति से जगत का कल्याण करने वाले हैं। महादेव आपसबों की मनोकामना पूर्ण करें। मैं इस पवित्र सावन माह के लिए आप सभी माननीय सदस्यों के साथ सम्पूर्ण बिहारवासियों को सदन की ओर से शुभकामनाएँ देता हूँ।

वर्त्तमान सत्र में कुल 5 बैठकें निर्धारित हैं, इसमें प्रश्न एवं लोक महत्व की सूचनाओं के साथ–साथ वित्तीय वर्ष 2024–25 के प्रथम अनुपूरक व्यय विवरणी का व्यवस्थापन होगा, राजकीय विधेयक भी लिए जाएंगे तथा गैर सरकारी संकल्प की सूचना भी निपटाए जाऐंगे। पाँच कार्य दिवसों का यह सत्र अपने आकार में भले ही छोटा है, लेकिन इसमें आमजन और राज्यहित से जुड़े कई मुद्दों का निपटारा होगा।

माननीय सदस्यगण, लोकतंत्र विचार–विमर्श, समझाने–बुझाने एवं समझौते पर भरोसा करता है। संसदीय व्यवस्था में वाद–विवाद पर जोर केवल इसलिए नहीं दिया जाता है कि नीति के अधिकांश सवालों पर दृष्टिकोणों और हितों में मतभेद रहता है, बल्कि इसलिए भी कि मतभेदों की अभिव्यक्ति और उसका सुना जाना लोकतंत्र का अनिवार्य अंग है। संसदीय प्रणाली विविधता और नागरिकों के बीच समानता को आधारभूत तत्व मानकर चलता है और मतभेदों को विचार–विमर्श से दूर किया जाता है क्योंकि किसी भी विषय पर सहमति प्राप्त करने का यही सबसे अच्छा उपाय है।

अतः आपसबों से अनुरोध है कि इस छोटे से सत्र में सदन के समय का भरपूर सदुपयोग करें, और सार्थक विमर्श में भाग लें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सत्र संचालन में मुझे आपसबों का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

****